स्थाण्वीश्वर महादेव मन्दिर, कुरुक्षेत्र

यह तीर्थ कुरुक्षेत्र रेलवे स्टेशन से लगभग 3 किलोमीटर दूर थानेसर शहर के उत्तर में झांसा मार्ग पर विद्यमान है । मन्दिर वर्तमान में भी अपनी प्राचीनता बनाए हुए है ।

तीर्थो की धरा कुरुक्षेत्र के पवित्रतम तीर्थो में से एक अत्यन्त पुण्यदायी तीर्थ है- स्थाणवीश्वर अथवा स्थाणेश्वर तीर्थ । सर्वप्रथम इस तीर्थ का उल्लेख हमें बौद्ध साहित्य में उपलब्ध होता है । 'महाबग्ग' नामक ग्रन्थ में मध्य देश की सीमा को बताते हुए 'थूणा' नामक ब्राह्मण गांव को पश्चिम में उल्लिखित किया गया है :

पुरत्थिमाय दिसाय कजंगलं नाम निगमो ।
दक्खिणाय दिसाय सेतकाण्णिकं नाम निगमो ।
पच्छिमाय दिसाय थूणं नाम ब्राह्मण गामो ।

(महाबग्ग, पृ0 216)

दिव्यावदान नामक बौद्ध ग्रन्थ में भी मध्यप्रदेश की सीमा का निर्धारण करते हुए पश्चिम में उसका विस्तार 'स्थूण-उपस्थूण' नामक ब्राह्मण गांवों तक वर्णित किया है :

पूर्वेणोपालि पुण्डवर्धनं नगरं-दक्षिणेन शरावती नगरी
पश्चिम स्थूणोपस्थूणकौ ब्राह्मणग्रामकौ ।

(दिव्यावदान, पृ0 13)

'महाजनक जातक' में भी इसका उल्लेख स्पष्ट रूप से मिलता है

ते मिक्खाचार बेलाय थूणां नाम नगरं पापुणिंस्तु ।

(जातक वा0 2, पृ0 62)

वामन पुराण में इस तीर्थ का स्पष्ट नामोल्लेख करते हुए निम्न प्रकार से इसके महत्त्व को बताया है :

स्थाणुतीर्थं ततो गच्छेत् सहस्रलिंगशोभितम् ।
तत्र स्थाणुवटं दृष्ट्वा मुक्तो भवति किल्विषैः ।

(वामन पुराण, सरोवर माहात्म्य, अध्याय 21, श्लोक 30)

अर्थात् तत्पश्चात् हजारों लिंगों से सुशोभित स्थाणु तीर्थ को जाना चाहिए जिसके दर्शन मात्र करते ही व्यक्ति पापों से छूट जाता है ।

यह तथ्य पूर्णतया सत्य है कि कुरुक्षेत्र को विश्व में विख्यात होने का सबसे बड़ा कारण गीता की उपदेश स्थली का होना ही है, लेकिन यह भी नितान्त सत्य है कि प्राचीन काल से ही यह स्थान भगवान आशुतोष देवाधिदेव शंकर का भी अति महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है । इस नगर के इष्टदेव प्रमुख रूप से स्थाण्वीश्वर महादेव ही रहे हैं । स्वयं प्रजापति ब्रह्मा के द्वारा यहां पर स्थाणु के लिंग विग्रह की स्थापना की गई जिसका प्रमाण वामन पुराण के निम्न श्लोक से मिलता है :

एवं स्तुतो देवगण: सभक्त्या स: ब्रह्ममुख्यैश्च पितामहेन ।
त्यक्त्वा तदा हस्तिरूपं महात्मा लिंगं तदा सनिधानं चकार ।

(वामन पुराण, सरोवर माहात्म्य 44/38)

वामन पुराण एवं महाभारत में स्पष्टतया इस तीर्थ का नामोल्लेख मिल जाने से इस तीर्थ की प्राचीनता असन्दिग्ध हो जाती है । अत्यन्त प्राचीनकाल से ही स्थाण्वीश्वर महादेव थानेसर नगर के अधिष्ठाता, एवं आराध्य देव रहे हैं । वामन पुराण में ऐसा वर्णन है कि स्थाणु तीर्थ के चारों ओर अनेक तीर्थ विद्यमान हैं :

स्थाणोर्वटस्योत्तरत: शुक्रतीर्थं प्रकीर्तितम् ।
स्थाणोर्वटस्य पूर्वेण सोमतीर्थं द्विजोत्तम ।
स्थाणोर्वटं दक्षिणतो दक्षतीर्थमुदाहृतम् ।
स्थाणोर्वटात् पश्चिमत: स्कन्दतीर्थं प्रतिष्ठितम् ।
एतानि पुण्यतीर्थानि मध्ये स्थाणुरिति स्मृत: ।
तस्य दर्शनमात्रेण प्राप्नोति परमं पदम् ।

(वामन पुराण, 36/1-3)

अर्थात् स्थाणुवट के उत्तर में शुक्र, पूर्व में सोम, दक्षिण में दक्ष तथा पश्चिम में स्कन्द तीर्थ हैं । इन सभी तीर्थों के मध्य में स्थाणु तीर्थ विद्यमान है । जिसके दर्शन मात्र से ही व्यक्ति मोक्ष को प्राप्त करता है । नि:सन्देह स्थाणु तीर्थ के कारण ही इस तीर्थ का नाम स्थाणवीश्वर पड़ा ।

महाभारत के शल्य पर्व में ऐसा वर्णन मिलता है कि भगवान शिव ने इस स्थान पर घोर तप किया था । सरस्वती की पूजा करने के पश्चात् उन्होंने इस तीर्थ की स्थापना की थी । इसका स्पष्ट प्रमाण निम्न श्लोक में मिलता है :

यत्र स्थाणु महाराज तप्तवान् परमं तपः ।
यत्रेष्ट्वा भगवान् स्थाणुः पूजयित्वा सरस्वतीम् ।
स्थापयामास तत्तीर्थं स्थाणुतीर्थमिति प्रभो ।

(महाभारत, शल्य पर्व)

इस तीर्थ के महत्त्व का वामन पुराण में बड़ा विस्तारपूर्वक वर्णन है :

लिंगस्य दर्शनादेव पश्यन्ति परमं पदम् ।।
अहन्यहनि तीर्थानि आसमुद्रसरांसि च ।
स्थाणुतीर्थं समेष्यन्ति मध्यं प्राप्ते दिवाकरे ।।
स्तोत्रेणानेन च नरो यो मां स्तोष्यति भक्तितः ।
तस्याहं सुलभो नित्यं भविष्यामि न संशयः ।।

(वामन पुराण 45/3-5)

अर्थात् यहां स्थित लिंग का दर्शन करने पर व्यक्ति मोक्ष को प्राप्त करते हैं । मध्याह्न के समय समुद्र से लेकर सरोवर तक के सभी तीर्थ प्रतिदिन स्थाणु तीर्थ में आ जाते हैं ।

स्थाण्वीश्वर नगर के लोगों की शिव के प्रति आगाध श्रद्धा थी । प्रत्येक घर में शिव उपास्य थे ।

गृहे गृहे तु पूजनम-गवानखण्ड परशु ।

(हर्षचरित 3/45)

निश्चय ही 'स्थाणु' अर्थात् शिव के नाम से ही नगर का नाम स्थाण्वीश्वर पड़ा । शैव पूजा की दृष्टि से पवित्र होने के कारण दाक्षिणात्य शैव भैरवाचार्य ने इसे बेताल साधना के लिए उपयुक्त स्थल के रूप में चुना । स्थाण्वीश्वर लिंग के माहात्म्य का वराह पुराण में विस्तृत वर्णन है । इस में वर्णित है कि स्थाणवीश्वर लिंग सन्निहित तीर्थ के निकट स्थाणु तीर्थ के समीप स्थित है । रेत युक्त पश्चिम से आने वाली हवाओं से मूल लिंग ढक गया था परिणामतः नये लिंग को स्थापित किया गया । यह भी बताया गया है कि सरस्वती नदी के सतत प्रवाह बदलते रहने से लिंग को सात बार स्थापित किया गया । मुख्य लिंग के चारों ओर सहस्त्रों लिंग स्थापित थे जिन्हें पाशुपतों के द्वारा स्थापित किया गया था ।

स्थाण्वीश्वर नगर कुछ उन प्रसिद्ध प्राचीन नगरों में से एक रहा है जिसे प्राचीन भारत में राजधानी होने का गौरव मिला । यह श्रीकण्ठ जनपद की राजधानी थी । शक्तिशाली वर्धन वंश की उत्पत्ति व उदय यहीं पर हुआ । प्रतापी सम्राट प्रभाकर वर्धन एवं हर्षवर्धन के समय तो यह नगर वैभव एवं गौरव की चरम सीमा पर था । इस का गौरवपूर्ण इतिहास बाणरचित हर्षचरित, चीनी यात्री ह्वेनसांग एवं मुस्लिम इतिहासकारों के स्फुट विवरणों से ज्ञात होता है । ह्वेनसांग सम्राट हर्षवर्धन के शासनकाल में भारत की यात्रा के उद्देश्यों से चीन से भारत आया था ।

सम्राट हर्षवर्धन के राजकवि बाणभट्ट द्वारा विरचित हर्षचरित नामक महाकाव्य में स्थाण्वीश्वर नगर के सौन्दर्य का अनुपम चित्रण किया गया है :

प्रथमोऽवतार इव ब्रह्मलोकस्य-हर्षचरित, तृतीय उच्छवास ।

यस्तपोवनमिति मुनिभिः, संगीतशालेति लासकैः, यमनगरमिति शत्रुभिः, चिन्तामणिभूमिरित्यर्थिभिः, वीरक्षेत्रमिति शस्त्रोपजीविभिः, गुरुकुलमिति विद्यार्थिभिः गन्धर्वनगरमिति गायकैः, विश्वकर्ममन्दिरमिति विज्ञानिभिः, लाभभूतिरिति वैदेहकैः, द्यूतस्थानमिति बन्दिभिः, साधुसमागमइति सद्भिः, वज्रपंजरमिति शरणागतैः, विटगोष्ठीति विदग्धैः, सुकृतपरिणाम इति पथिकैः, असुरविवरमिति वातिकैः, शाक्याश्रम इतिशामिभिः, अप्सरःपुरमिति कामिभिः, महोत्सवसमाज इति चारणैः, वसुधारेति च विपुरैगृहात् ।

(हर्षचरित, 3 / 5)

अर्थात् यह मुनियों का तपोवन, सुधीजनों की संगीतशाला, शत्रुओं का यमनगर, धनलोलुपों की चिन्तामणि, शस्त्रोपजीवियों का वीरक्षेत्र, विद्यार्थियों का गुरुकुल, गायकों का गन्धर्व नगर, विज्ञानियों के लिए विश्वकर्मा मन्दिर, वैदेहिकों की लाभ-भूमि, बन्दियों का द्यूतस्थान, भले लोगों के लिए साधुसमागम, वातिकों के लिए असुर विवर, शान्तिप्रेमियों का शाक्याश्रम, कामियों के लिए अप्सरः पुर, चारणों के लिए महोत्सव समाज और विप्रों के लिए वसुधा के समान था ।

स्थाणु मन्दिर की अद्भुत विशेषता यह है कि यहां आने वाले को आत्मिक शान्ति का आभास होता है । मन निर्मल होकर चित्तवृत्ति स्थिर हो जाती है । मन्दिर में सदैव अखण्ड ज्योति प्रकाशित रहती है । श्रद्धालु जन अपना अभीष्ट फल प्राप्त करते हैं । आजकल यह मन्दिर महानिर्वाणी अखाड़ा के अन्तर्गत श्री प्रभातपुरी जी के प्रेरणामयी निर्देशन के अधीन विकास के पथ पर निरन्तर अग्रसर होता जा रहा है । पुराने जीर्ण-शीर्ण खण्डहर को एक अति आधुनिक तीर्थ का रूप दिया गया है । मन्दिर के विशाल सत्संग भवन में आदि शक्ति सिंहवाहिनी दुर्गा की विशाल मूर्ति है । स्थाणेश्वर तीर्थ में स्थित सरोवर का भी जीर्णोद्धार किया गया है । इसके चारों तरफ सुन्दर एवं पक्के घाट का निर्माण किया गया है । शिवरात्रि महापर्व को अनेक श्रद्धालु एवं दर्शनार्थी इस तीर्थ में हजारों की संख्या में उमड़ पड़ते हैं । चैत्र के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को इस तीर्थ में स्नान करने से परम पद की प्राप्ति होती है ।